जनपद बलरामपुर (उ0प्र0) मे ं बढ़ती जनसंख्या समस्या एव ंसमाधान

डॉ0 सर्वेश्वर नाथ सिंह (एसो0 प्रोफेसर भूगोल)

एम0 एल0 के0 पी0 जी0 कॉलेज बलरामपुर (उ0प्र0)

जनसख्ं या सम्बन्धी अध्ययनो ं का प्रारम्भ कब हुआ? यह निश्चय रूप स` व्यक्त करना कठिन कार्य है विविध तथ्यों के अनुशीलन स` यह स्पष्ट होता है कि इसका प्रारम्भ मानव के वैद्धिक विकास से ही प्रारम्भ हुआ है। पवू र् की अध्ययनों एवं अभिलखे ाे ं स` स्पष्ट होता है कि मानव सभ्यता के साथ ही जनाकिकी विश्लेषण भी प्रारम्भ हुआ। प्राचीन काल में चीन, मिश्र, यूनान आरै मसे ाेपेाटामिया जैस` प्राचीन सभ्यताओं मे ं जनसख्ं या सम्बन्धी अभिलखे ा तैयार किये जाते थे। 435 इर्स ा पवू र् में जनगणना तैयार की गयी थी तथा भारत में भी रामायण एवं महाभारत में काल जनगणना के प्रमाण मिलते हैं।

भारत मे ं जनसख्ं या भूगाले के अन्तर्गत जनसख्ं या वितरण एवं वृद्धि पर अधिक अध्ययन हुए है लेकिन किसी क्षेत्र की जनसख्ं या के विविध पहलुओं का सम्यक वहां के भौगोलिक परिवेश में करने का सर्वप्रथम प्रयास कृष्णन का अध्ययन क्षेत्र गुरुदासपुर एवं अमृतसर जनपद तथा चान्दना का अध्ययन क्षेत्र रोहतक एवं गुड़गाँव के हरे मैदान एवं नेपाल की जनसख्ं या का अध्ययन क्रमशः पी० के० सिंह एल० आर सिंह, बनर्जी एवं रे तथा एस० के० महे ता द्वारा प्रस्तुत किया गया। तारा कनिष्कर (1985) द्वारा प्रिन्सिपुल स्टडीज, टी० के० राय व जी० रामा राव (1985) इन्ट्रोडक्शन टू वोल्यूसन ऑफ डेमागे`फिक इम्पवै ट ऑफ फैमली प्लानिंग प्रोग्राम बी०सी० खरे (1985) द्वारा सामाजिक जनांकिकी एवं भारत में जन स्वास्थ अध्ययन प्रस्तुत किया गया। इसके अतरिक्त भारत सरकार के कुछ विभागो ं यथा केन्द्रीय परिवार नियाजे न संस्थान नई दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय जनसख्ं या अध्ययन संस्थान मुम्बई आदि भी जनसख्ं या के मखु य स्त्राते है।

अध्ययन क्षेत्र– शिवालिक के पृष्ठभूमि में अवस्थित उत्तर प्रदेश का सर्वाचिक पिछड़ा एवं अविकसित जनपद बलरामपुर नेपाल के अन्तर्राष्ट्रीय सीमा हो मिलता हुआ। 27⁰03′20′′ उत्तरी अक्षाश स` 27⁰05′4′′ उ0 अक्षाश तथा 82⁰02′30′′ पवू र्ी देशान्तर स` 82⁰04′9′′ पूर्वी देशान्तर के बीच अवस्थित है उत्तर से दक्षिण इस की लम्बाई 81 कि0मी0 तथा पूरब स` पश्चिम 72 कि0मी0 के अधिकतम चौड़ाइ र् में यह जनपद प्रसारित है। यह जनपद के परू ब मे ं सिद्धाथ र् नगर पश्चिम में श्रावस्ती जनपद, दक्षिण में गाण्े डा की जनपदीय सीमा स` यदि घिरा हुआ है ता` इसका उत्तर मे ं विस्तार नेपाल की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक है इस जनपद का कुल क्षेत्रफल 3457 वर्ग कि0मी0 है इस जनपद म` बलरामपुर सदर तुलसीपरु उतरौला नाम की तीन तहसील, हरैया, सतघरवा, बलरामपुर, तुलसीपरु , गैसड़ी, पचपडे ़वा, श्रीदतगंज, उतराले ा गैड़ास बजु ुर्ग व रेहरा बाजार नाम की नाै विकासखण्ड 101 न्याय पचं ायत एवं 999 आबाद गाँव तथा 22 गैर आबाद गाँव है। यहाँ उतराले ा, बलरामपुर, तुलसीपरु एवं पचपडे ़वा नगर पचं ायत के रूप में नगरीय सुविधाओं स` युक्त है।

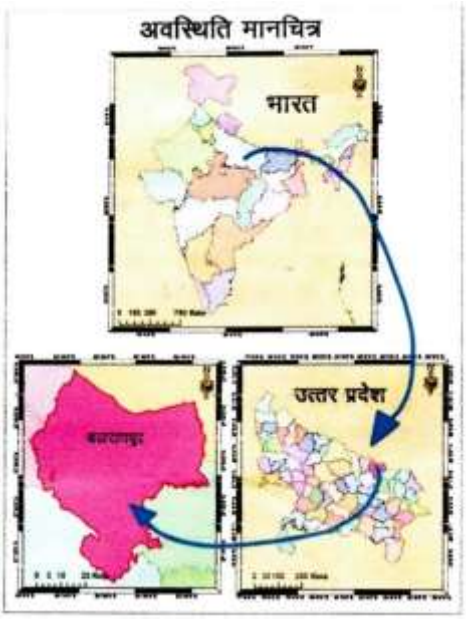

जनपद बलरामपुर का प्रशासनिक प्रारूप (2016)

क्र0सं0	विकास खण्ड का नाम	न्याय पचं ायत की सं०	ग्राम सभाओ ं की सं०	पचं ायत घर की सं०	ग्रामो ं की सं०
1	हरैया सतघरवा	14	91	80	132
2	बलरामपुर	17	98	85	135
3	तुलसीपुर	12	85	78	109
4	गैसड़ी	14	90	80	143
5	पचपडे़वा	11	79	67	134
6	श्रीदत्तगंज	10	53	43	95
7	उतरौला	07	61	49	114
8	गैड़ास बजु ुर्ग	06	38	29	58
9	रहे रा बाजार	102	72	60	98
योग	अध्ययन क्षेत्र	101	667	571	1018

अध्ययन क्षेत्र की सरचना मख्ु यरूप से दा` भागों (तराइ ं क्षेत्र उपरहर क्षेत्र) मे ं विभक्त है। तराई क्षेत्र का भाग उपशिवालिक के जंगल से प्रारम्भ हो कर राप्ती नदी तक फैला हुआ है राप्ती के पास धरातल की समद्रुतल स` आसै त ऊँचाइ ं 100 मी0 तक है एवं शिवालिक सीमान्त वनमाला तक इस जनपद के धरातल की आसै त ऊँचाइ ं 160 मी0 तक है। इस क्षेत्र का धरातलीय ढाल पश्चिम स` परू ब की तरफ है। तराइ ं के हिस्स` में शिवालिक एवं राप्ती के बीच पचपडे़वा गैसड़ी, तुलसीपरु , हरैया सतघरवा एवं बलरामपरु विकास खण्ड मे ं फैली हुई एक चौडी पट्टी सघन जंगलां ` स` आज भी भरी हुई है। परू` जनपद के 827.53 वर्ग किलो0 मी0) जंगल का अधिकांश भाग इसी क्षेत्र में हैं।

राप्ती स` लके र दक्षिणी सीमा निमार्ण ा करने वाली विसही तक फैला जनपद का हिस्सा उपहर के नाम स` जाना जाता है तराई के हिस्स` के तरह यह क्षेत्र असमतन नहीं है। यहाँ का धरातलीय आसै त ऊँचाई 96–100 मी० के बीच है। इस हिस्स` का ढाल भी उत्तर–पश्चिम स` दक्षिण–परू ब है। इसकी प्राकृतिक दक्षिणी सीमा बलुही कैदार तक विस्तृत है। श्रीदत्तगंज, उतरौले ा, गैड़ास बजु ुर्ग, रेहरा बाजार विकासखण्ड का भाग इसी उपरहर क्षेत्र में ही आता है।

अध्ययन का उद्देश्य– तीव्र गति स` बढ़ती जनसख्ं या हमारे देश और विशेषकर प्रदेश के लिये ज्वलन्त समस्या बनी हुई है। आम आदमी के जीवन का काइ ं भी पक्ष इसके प्रभाव से अछूता नहीं है। बते हासा बढ़ती आबादी ने हमारे आथिर्क समाजिक एवं सास्ंकृतिक पक्षो ं का` बहुत अधिक प्रभावित किया है विशेष रूप स` परिवार की मूल भूत आवश्यकताओं जैस–े राटे ी कपड़ा मकान की आपूर्ति मे ं भी कठिनाइ ं आ रही है। राजे गार के अवसर कम होने से गरीबी एवं बेराजे गारी बढ़ रही हैं। प्राकृतिक स्त्रोत समाप्त हो रहे हैं। पयार्व रण के बिगड़ने एवं शहरीकरण के बढ़ने स` अनेक नई समस्याय पैदा हो रही है। देश एवं प्रदेश में आज निरन्तर बढ़ती जनसख्ं या ही विकास में बड़ी बाधा है। अध्ययन क्षेत्र के जनसख्ं

या के अध्ययन का उद्देश्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न योजनओं का` क्रियान्वित करना तथा जनमानस में अनुकूल चेतना का विकास करना जिससे आज के बालक बालिकाओं का` भविष्य कि उनके परिवार का आकार क्या होना चाहिय।

विभिन्न परिवत्यो ं उपकरणो ं आदि का प्रयागे : अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के आकडे मपै कम्प्यूटर कैल्कुलटे र आदि का प्रयागे किया गया है।

प्रदत्त संग्रह विधिः– प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न स्त्राते ों स` प्राप्त प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको का` अध्ययन एवं विश्लेषण का माध्यम बनाया गया है। जो विविध सरकारी प्रकाशनो, स्मृतियों एव ं व्यक्तिगत सर्वेक्षण स` प्राप्त किये गये है। जनसंख्या सम्बन्धी आकडे विभिन्न जनगणनाहरत पुस्तिकाओं, साख्यिकीय पत्रिकाओं डायरिया` एवं विभिन्न पुस्तिकाओं से प्राप्त किये गये है। जनसख्ं या के सभी वर्गों का प्रतिचयन सर्वेक्षण किया गया है, जिससे पज्र ननता मर्त्यता जीवनस्तर, प्रति व्यक्ति आय एवं जनमानस मे जनसख्ं या वृद्धि परिवार कल्याण के प्रति दृष्टिकाणे ा का आकलन किया जा सके। परिवार कल्याण सम्बधी समंक परिवार कल्याण निर्देशालय आदि सगं ठनों स` प्राप्त किये गये है। अन्तः सभी समंको का गहन साख्यिकीय विश्लेषण एवं मानचित्रण किया गया है जिससे समन्वित दृष्टिकाणे ा तक पहुंचा जा सके। लेकिन प्रतिशत वृद्धिदर में काफी असमनता है। 1961 से 2011 के दशकों में जनसख्ं या के

स्त्री–परु ष मे ं अनुपात काफी असमानता है वर्ष 1971 में 1000 परु षों में स्त्रियों की सख्ं या मात्र 868 जो 2011 में बढ़कर 926 हो गयी जो आज भी स्त्रियों की सख्ं या परु षों की तुलना में 72 से कम है। ग्रामीण एवं नगरीय जनसख्ं या वृद्धि–

अध्ययन क्षेत्र में 2011 की जनगणना के अनुसार क्षेत्रो ं की कुल जनसख्ं या 1992324 है जा` 1961 से 2011 तक इन 50 वर्षों ं में 793354 स` बढ़कर 2148665 हो गयी है तथा जनसख्ं या का वृद्धिदर 11.92 स` बढ़कर 27.72 प्रतिशत हो गयी है। परन्तु नगरीग जनसख्ं या पर दृष्टिपात किया जाय तो नगरीग जनसख्ं या में काफी वृद्धि हुई है यह जनसख्ं या 1961 में 41841 थी वा` 2011 में बढ़कर 156341 हो गयी है। जनसख्ं या घनत्व विकास खण्ड वार मानचित्र में दिया गया है।

तालिका 1.2

जनपद बलरामपुर की ग्रामीण एवं नगरीय जनसख्ं या

क्र0सं0	वर्ष	ग्रामीण जनसख्ं या	नगरीय जनसख्ं या
1.	1961	751513	41841
2.	1971	833880	58427
3.	1981	999837	85465
4.	1991	1253419	115139

5.	2011	1546770	135580
	2011	1992324	156341

उ0 प्र0 टाउन डायरक्े टरी

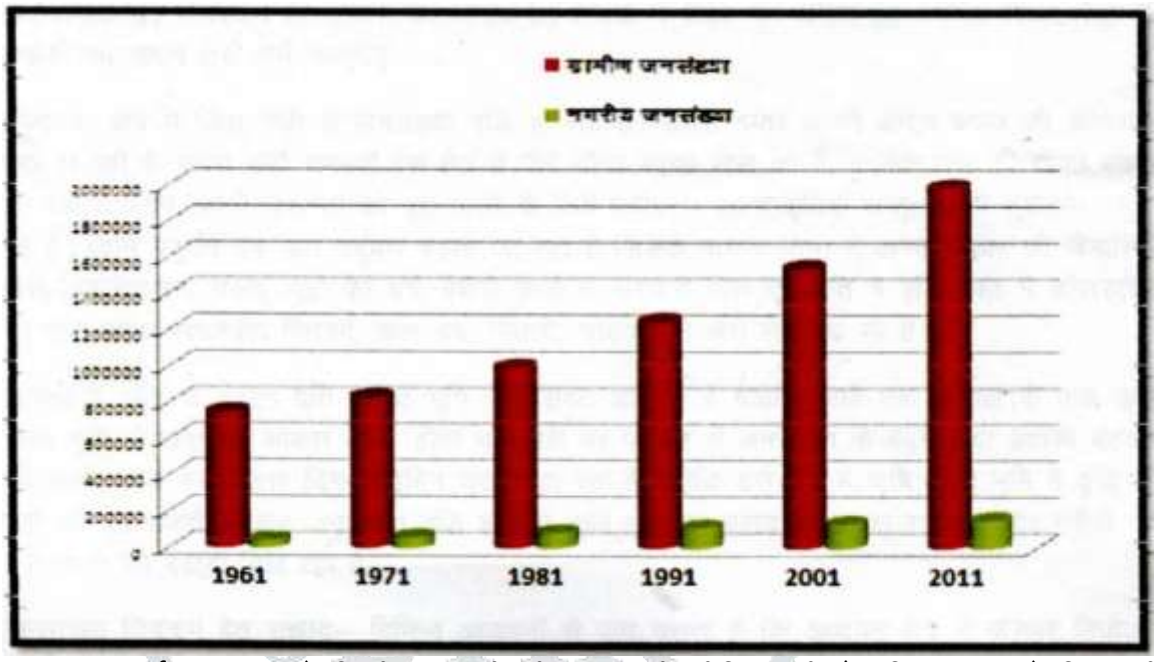

निष्कष– बढ़ती हुई जनसखं या वर्तमान समय में किसी राष्ट्र की सीमा तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह परू े विश्व की समस्या है यह गाँव स्तर स े लके र देश एवं विश्व स्तर की समस्या है यह आज एक मानवीय समस्या के रूप में उदित हुई है। इसस े जीवन का प्रत्येक पक्ष प्रभावित हुआ है। व्यक्तिगत रूप स े जहां व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं आथिर्क विकास पर इसका प्रभाव पड़ा है वही अंतर्राष्ट्रीय मंच पर शांति एवं सरु क्षा पर तमाम प्रश्न उठने लगे है। न्यूनतम आवश्यकओं (राटे ी, कपड़ा, आरै मकान) की पूर्ति पर बाधक होने लगी है तथा खाद्य पदार्थों की मागं निरन्तर बढ़ रही है। इस कारण विश्व सदा एक सतत समस्या सामना कर रहा है। निश्चय ही हरितक्रान्ति के कारण विश्व के विभिन्न भागों मे ं जैसे फिलीपीन्स आरै श्रीलकं ा में 'अद्भतु धान' आरै मैक्सिका े भारत पाकिस्तान आदि गेहूँ के कारण खाद्यात्पादन में तीव्र गति स े वृद्धि हइ्र । फलस्वरूप जनसखं या वृद्धि समथर्क ों का े अकाल हेतु जनसखं या वृद्धि के स्थायित्व की पहल करने वाले सरं क्षणवादियों की आपक्षे ाा सम्बल प्राप्त हुआ। पवू र् में जापान एक एसे ा देश है जिसने गर्भपात द्वारा अपनी जनसखं या समस्या पर नियन्त्रण प्राप्त किया। परन्तु वहृ द साइज वाले विकासशील राष्ट्र जैस े भारत, चीन, इन्डोनेशिया, पाकिस्तान, बागं लादेश आदि जहाँ जनसखं या समस्या अति विकट है इस पर नियंत्रण करने में अभी असमथ र् है। इन देशो ं में बहुत सी समस्याए ं है। जनसख्ं या विशाल है वाषिर्क वृद्धिदर तीव्र है अधिकांश लोग अशिक्षित है आरै व े भूमि के छाटे े स े टुकड़े पर जीवन यापन करने के लिये सघं षर्र त है। इन परिस्थितियो ं की सफलता में भारी अवराधे है इन समाजों में परिवार नियाजे न के आवश्यकता की समझा कम है।

बलरामपुर जनपद में तीव्र जनसखं या वृद्धि एवं उपरीक्षा जनांकिकाय प्रवृत्तियों के निम्नलिखित प्रमख्ु ा कारण है।

(1) उच्च जन्मदर एवं घटती मृत्युदर (2) विवाह की व्यापकता आरै छाटे ी उम्र में शादी (3) शिक्षा का अभाव एवं अज्ञानता (4) अविवके पणू ा र् मातृत्व (5) प्रति व्यक्ति आय में प्रारंभिक वृद्धि (6) धामिर्क आरै सामाजिक (अविश्वास (7) मनारे ंजन के साधनों का अभाव (8) स्त्रियों में शिक्षा का अभाव (9) प्रजनन शिक्षा, स्वास्थ्य सवे ाओं का अभाव (10) गम र् जलवायु

अध्ययन क्षेत्र में जिस तेजी स े जनसंख्या वृद्धि हो रही है उसस े हमारे सामने अनेक प्रकार की समस्याए ं पैदा हो रही है सबस े बड़ी समस्या इस क्षेत्र में पीने याग्े य स्वच्छ जल की है, क्योंकि जल की खपत बढ़ती जा रही है, लागे अपनी जरूरतों का े परू ा करने के लिये पर्यावरण एवं प्राकृतिक सन्तुलन को नुकसान पहुंचा रहे है। ध्वनि प्रदूषण एवं जल प्रदूषण बढ़ता जा रहा है जिसके कारण लागे ों मे ं अनेक प्रकार की बिमारियों जैस े चिड़चिड़ापन, तनाव, पुट्ठों का दर्द, बचे ैनी, कार्य में नीरसता, दिल की गति मे ं वृद्धि रक्त में काले स्ट्रॉल की वृद्धि, अपच, रक्तस्त्राव, सिरदर्द, कान दर्द, मितली, सांसफूलना जैसे रोग बढ़ रहे है।

जनसखं या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति भूमि में गिरावट आ रही है क्योंकि जहाँ एक परिवार के पास कृषि याग्े य भूमि के जाते का आकार बढ़ा होता था। वहीं पर परिवार में जनसखं या के बढ़ने तथा आपसी बंटवारे का े लके र जाते

का आकार दिन–प्रतिदिन घटता जा रहा है क्योकि इस क्षेत्र में कृषि यागे य भूमि मे ं वृद्धि तो नहीं की जा सकती लेकिन जनसख्ं या वृद्धि होने स ेकृषि भूमि पर दबाव बढ़ता जा रहा है आरै गरीबी एवं बेरोजगारी का ेबढ़ावा मिल रहा है।

जनसंख्या नियंत्रण हेतु सझु ाव– विभिन्न अध्ययनों स ेपता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में परिवार नियाजे न कार्यक्रम एवं नीतियों वरनु विभिन्न स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम एवं नीतियों का भी क्रियान्वयन सही
रूप स ेनहीं हो सका है। इसके परिणाम स्वरूप जनसख्ं या वृद्धि में कमी नहीं आ रही है।

जनसख्ं या पर नियंत्रण नहीं होने से अनेक प्रकार की पारिवारिक समस्याए ं लगातार उत्पन्न होती जा रही है। इसके लिये परिवार नियाजे न के बारे में हर वर्ग के लोगों का ेचाहे वह गरीब हो या धनी हो का ेभरपरू जानकारी देना आवश्यक है। नसबंदी कॉपर–टी, कण्डोम सहित अन्य ससांधनों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है तथा इसका जनपद स्तर स ेग्राम स्तर तक प्रचार प्रसार की आवश्यकता है। बहुत स ेलागे ों में यह भम्र है कि इसका इस्तेमाल करने स ेअनेक प्रकार के रोग कुरुपता कमजारे ी आ जाती है सर्व प्रथम इन भम्र ों का ेदूर करने की आवश्यकता है।
सदं र्भ

1. आरिफा खातून 2004 ''घासे ी तहसील की जनसख्ं या''
2. **Clark JI** 1972 **"Population Programme" on Press Oxford.**
3. जनपद बलरामपुर का सार संकलन
4. सांख्यिकी पत्रिका 2016 जनपद बलरामपुर
5. यादव हीरा लाल ''जनसख्ं या भूगोल'' वसुन्धरा प्रकाशन
6. **Triwartha, GT,** 1969, **A Geography of Population world pattern**. 7. उत्तर प्रदेश टाउन डायरके टरी
8. कुरुक्षत्रे पत्रिका (जुलाई, 2008)
9. सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, बलरामपुर।